ISSN: 2582-7162
शोध

जयपुर शहर की मलिन बस्तियों का पर्यावरण पर प्रभाव

डॉ. अतर सिंह[1] ,डॉ. अनिल फागना[2]

[1]पूर्व सह. प्रोफेसर, राजस्थान विश्वविद्यालय
[2]प्राचार्य घुश्मेश्वर महाविद्यालय, शिवाड़
(पूर्व शोधार्थी भूगोल विभाग, राज.विश्व.)

Corresponding Author:
डॉ.अनिल फागना
प्राचार्य घुश्मेश्वर महाविद्यालय, शिवाड़
(पूर्व शोधार्थी भूगोल विभाग, राज.विश्व.)
Email: : lokesh80058@gmail.com

Received February 18, 2023, Accepted February 10, 2023 Published March 04, 2023

प्रस्तावना :–मनगरीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज में कई परिवर्तनों को जन्म दिया है जिनसे औद्योगिक, आर्थिक व नगरीय विकास को बढ़ावा मिला है। सामाजिक गतिशीलता में वृद्धि हुई है। किन्तु नगरीकरण के कारण कई समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 1996 में 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' के लिए 'श्रेष्ठतर जीवन के लिए स्वस्थ नगर' का संदेश दिया है। यह संदेश तभी प्रयोग सिद्ध हो सकता है, जबकि नगर में नगरीकरण में उत्पन्न समस्याएँ कम–से–कम हों। वर्तमान में नगर आज अनेक समस्याओं से ग्रस्त हैं।

राजस्थान राज्य की राजधानी, भारत की स्मार्ट सिटी एव विश्व विरासत के रूप में विख्यात जयपुर शहर भी निरंतर बढ़ती हुई मलिन बस्तियों की समस्या से ग्रस्त है, जिसने कई प्रकार के प्रभाव पर्यावरण पर डाले हैं। प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष दोनों तरफ से पर्यावरण का अवनयन हुआ है।

मुख्य शब्दः– जयपुर शहर;, मलिन बस्तियों;, पर्यावरण

शोध विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों का संकलन चयनित मलिन बस्तियों के परिवारों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र तथा अमानीशाह नाला बस्तियों (शास्त्री नगर व अम्बाबाड़ी के आसपास का क्षेत्र) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। विषय के सूक्ष्म, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक अध्ययन हेतु आंकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं आरेखों द्वारा विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर शहर में मलिन बस्तियों में निवासरत् परिवारों की सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन कर पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रस्तुत करना है।

जयपुर जिले का सामान्य एवं भौगोलिक परिचयः–

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। यह तीनों ओर से प्राचीन अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है। इसकी सीमाऐं अलवर, सीकर, नागौर, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर व दौसा से लग रही है। यह 26°23′ से 27°51′ उत्तरी अक्षांश 74°55′ से 76°50′ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। जयपुर जिले की अर्द्धशुष्क जलवायु है। ग्रीष्म ऋतु में मई–जून माह में तापमान 40 से 45° तक पहुंच जाता है। वर्षाकाल जुलाई से सितम्बर माह के मध्यर रहता है। औसत 500 मिलीमीटर वर्षा प्राप्त करता है। शीत ऋतु में दिसम्बर एवं जनवरी माह में तापमान 5° से नीचे चला जाता हैं। इसका क्षेत्रफल 11,152 वर्ग किलोमीटर है।

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-569-573

शोध विधिः–

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः प्राथमिक व द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है। आंकड़ों का संकलन चयनित मलिन बस्तियों के परिवारों से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र तथा अमानीशाह नाला बस्तियों (शास्त्री नगर व अम्बाबाड़ी के आसपास का क्षेत्र) का चयन उद्देश्यपूर्ण निदर्शन विधि द्वारा किया गया है। विषय के सूक्ष्म, तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक अध्ययन हेतु आंकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन एवं आरेखों द्वारा विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में जयपुर शहर में मलिन बस्तियों में निवासरत् परिवारों की सामाजिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक संरचना का अध्ययन कर पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रस्तुत करना है।

जयपुर जिले का सामान्य एवं भौगोलिक परिचयः–

जयपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। यह तीनों ओर से प्राचीन अरावली पर्वतमाला से घिरा हुआ है। इसकी सीमाऐं अलवर, सीकर, नागौर, अजमेर, टोंक, सवाईमाधोपुर व दौसा से लग रही है। यह 26°23′ से 27°51′ उत्तरी अक्षांश 74°55′ से 76°50′ पूर्वी देशान्तर में स्थित है। जयपुर जिले की अर्द्धशुष्क जलवायु है। ग्रीष्म ऋतु में मई–जून माह में तापमान 40 से 45° तक पहुंच जाता है। वर्षाकाल जुलाई से सितम्बर माह के मध्यर रहता है। औसत 500 मिलीमीटर वर्षा प्राप्त करता है। शीत ऋतु में दिसम्बर एवं जनवरी माह में तापमान 5° से नीचे चला जाता हैं। इसका क्षेत्रफल 11,152 वर्ग किलोमीटर है।

मानव संसाधन के मुख्य तत्वः–

मानव संसाधन के मुख्य तत्वः–

जनसंख्या	6,63,971
जनसंख्या पुरूष	34,90,787
जनसंख्या महिला	31,73,184
लिंगानुपात	1000 पुरूष–909 महिलाएँ
जनसंख्या घनत्व	598 प्रति व्यक्ति
साक्षरता	76.44 प्रतिशत
कुल कार्यरत जनसंख्या	29.14

स्त्रोत जनगणना 2011

मलिन बस्तियाँः–

लोगों द्वारा सम्पादित क्रियाकलापों द्वारा ही समाज की आर्थिक स्थिति का पता चलता है। मलिन बस्तियाँ आर्थिक दृष्टि से अविकसित होती हैं। इनकी सम्पूर्ण सामाजिक–आर्थिक आवासीय विशेषताएँ उनकी आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है। इसी दृष्टि से चयनित मलिन बस्तियों के परिवारों की सामाजिक–आर्थिक एवं व्यावसायिक संरचना विश्लेषण किया गया है। ये बस्तियाँ औद्योगिक क्षेत्रों, रेलवे लाइनों, बंदरगाहों, नदी तटो, थोक बाजारों इत्यादि के आसपास निरंतर विकसित होती जा रही हैं। मलिन बस्तियों का सर्वाधिक विस्तार महानगरों में है। मुंबई के निकट धारावी एशियो की सर्वाधिक विस्तृत मलिन बस्ती है। मलिन बस्तियों के घर सामान्यतः कच्चे होते

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-569-573

हैं जो ईंट, मिट्टी, तिरपाल, टिनशैड, बांस इत्यादि से बने होते हैं। नहाना, खाना बनाना तथा सोना ज्यादार खुले स्थान में होता है। ये बस्तियाँ बाढ, आग, जलाक्रांति जैसी आपदाओं का आसान शिकार बन जाती हैं। समुचित अपवाह तंत्र एवं नालियों का अभाव हैजा, पीलिया, पेचिश जैसी जलजनित बीमारियों को जन्म देता है।

मलिन बस्ती के निवासी अधिकांशतः गावों से आये प्रवासी होते हैं, जो परिवहन की उच्च लागत का बोझ उठाने में असमर्थ होने के कारण अपने कार्यस्थल के निकट ही बस जाते हैं। सामान्यतः एक ही समुदाय या कार्यस्थल या मूल स्थान से जुड़े लोग साथ–साथ ही रहते हैं। मलिन बस्तियों के निवासियों में स्व–रोजगाररत, छोटे व्यापारी, घरेलू नौकर, रिक्शा चालक, कुली इत्यादि शामिल होते हैं।

अध्ययन क्षेत्र में लिंगानुपात 944 है तथा सर्वेक्षित बस्ती झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र तथा अमानीशाह नाला बस्तियों में लिंगानुपात क्रमशः 936, 901 हैं।

तालिका संख्या 1

चयनित मलिन बस्तियाँ

बस्ती का नाम	कुल जनसंख्या	कुल परिवार	सर्वेक्षित परिवार	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)
झालाना नाला पहाड़ी क्षेत्र	2000	587	67	5.36
अमानीशाह नाला	1700	457	43	3.22

स्त्रोतः जिला कलेक्टर भू–अभिलेखागार, जयपुर

तालिका संख्या 2

सर्वेक्षित मलिन बस्तियों में वैवाहिक स्थिति (प्रतिशत)

वैवाहिक स्थिति	झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र		अमानीशाह नाला		औसत	
	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला	पुरूष	महिला
विवाहित	20.24	20.24	22.32	22.63	21.28	21.44
अविवाहित	29.76	23.21	26.91	23.24	28.38	23.23
विधवा / विधुर	1.79	4.76	1.22	3.67	1.5	4.22
तलाकशुदा	2.0	–	–	4.0	1.0	2.0

आर्थिक संरचनाः–

इन मलिन बस्तियों में परिवार की औसत मासिक आय को तीन समूहों में बाँटा गया है।

1. अतिनिम्न मासिक आय वाले परिवार (2000 रूपये से कम)
2. निम्न मासिक आय वाले परिवार (2000 से 4000 रूपये)
3. निम्न माध्यम मासिक आय वाले परिवार (4000 रूपये से अधिक)

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-569-573

तालिका संख्या 3

परिवार में मासिक आय का स्वरूप (प्रतिशत में)

आय–समूह	झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र	अमानीशाह नाला	औसत
अतिरिक्त मासिक आय	76.47	12.12	44.29
निम्न मासिक आय	20.58	77.27	48.93
निम्न मध्यम मासिक आय	2.94	10.61	6.78

तालिका संख्या 4

मकानों का स्वामित्व (प्रतिशत में)

मकान का स्वामित्व	झालाना नाला व पहाड़ी क्षेत्र	अमानीशाह नाला	औसत
स्वयं का	76.47	12.12	44.29
किराये का	20.58	77.27	48.93

निष्कर्षः–

उपर्युक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि जयपुर शहर के मलिन बस्तियों के निवासियों में सामाजिक चेतना का अभाव, गरीबी, अशिक्षा एवं अज्ञानता का समावेश हैं। इनकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय है तथा निवासियों की आय की अपेक्षा उनका व्यय अधिक है। आर्थिक विपन्नता की दशा में यह व्यक्ति ऋण लेकर अपने व परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं। न्यूनतम आय के बावजुद मलिन बस्तियों के निवासियों में नशीली वस्तुओं का सेवन, जुआ, सट्टा आदि खेलने से जीवन निम्न होता जा रहा है।

एक कमरे में दस से पन्द्रह तक व्यक्ति रहते हैं। मकानों में शौचालय व पेशाबघर की सुविधाओं का नितांत अभाव होता है। मकान किराया अधिक होने से मकान लेना सम्भव नहीं है। झालाना डूंगरी में ऊपर पहाड़ी की ओर बसावट फैलने से वन विभाग की भूमि पर अतिक्रमण बढ़ रहा है। लकड़ी काटने के अवैध क्रियाकलाप होने लगे हैं। अपवाह तंत्र बिगड़ रहा है, बच्चों द्वारा सड़क पर शौच कर ली जाती है। मद्यपान कर लड़ाई–झगड़ा करना आम बात है जिससे ध्वनि प्रदूषण भी बढ़ता है। जगह–जगह कचरे एवं अपशिष्ट को डालने से वायु प्रदूषण बढ़ता है। नगरीय क्षेत्र में जमा कचरा नगरों के पर्यावण को प्रदूषित करता है। सूरत में फैली प्लेग महामारी का कारण कचरा ही था। गन्दा पानी व मल विसर्जन की उचित व्यवस्था नहीं होने से जल प्रदूषण की समस्या गहराती जाती है। कई प्रकार के अपराध, लूटपाट, नशाखोरी, वैश्यावृत्ति आदि प्रकार के अपराधों ने सामाजिक पर्यावरण को भी प्रदूषित किया है।

सरकार द्वारा मलिन बस्तीवासियों को पुनर्वास सुविधा उपलब्ध कराने की कोशिशें असफल साबित हुई हैं, क्योंकि

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-569-573

पुनर्वास कालोनियाँ कार्यस्थल से बहुत दूरी पर स्थित होती हैं। इन कालोनियों से घिरा हुआ बहुमंजिली पर्यावरण भी मलिन बस्तियों के लोगों को रास नहीं आता। एक मलिन बस्ती की समाप्ति का प्रयास दूसरी मलिन बस्ती के विकास को जन्म देता है। अब सरकार द्वारा अपना मुख्य ध्यान इन बस्ती वासियों के जीवन स्तर में सुधार लाने पर दिया जा रहा है और इसके लिए विभिन्न योजनाएँ संचालित की जा रही हैं ताकि इनके विकास हेतु सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थाओं के द्वारा सुविधायें उपलब्ध कराकर इनके जीवन स्तर को ऊँचा उठाया जा सके।

सन्दर्भ

1.	प्राथमिक आंकड़े	:	स्वयं द्वारा एकत्रण
2.	सिंह, इन्दिरा	:	''सांख्यिकी भूगोल'' डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
3.	अग्रवाल, अमित कुमार	:	''गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम'' रितु पब्लिकेशन जयपुर
4.	जिला दर्शन	:	सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग सचिवालय जयपुर राजस्थान
5.	मामोरिया, सी.बी.	:	ह्यूमन ज्योग्राफी
6.	अतिरिक्तांक प्रतियोगिताः दर्पण		भारतीय अर्थव्यवस्था 2022–2023
7.	पाण्डे, मंजू	:	भारत में बाल श्रमिक रिपोर्ट, 1991
8-	Mathur, Kanchan and Pradeep Bhargav 2004	:	Childhood Poverty in Rajasthan : A Review of Literature
9.	जलवायु आंकडे प्रतिवेदन	:	मौसम विभाग, जयपुर
10.	जिला जनसांख्यिकी	:	द्वितीयक आंकड़े, कार्यालय भू–अभिलेख निरीक्षक जयपुर

https://doi.org/10.47997/sdes-ijir/4.1.2023-569-573